International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

कर्नाटक वंश कालीन मिथिला समन्वय का युग एक ऐतिहासिक विश्लेषण

सुनीता प्रसाद

शोध छात्रा, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

मध्यकालीन मिथिला में कर्नाट अथवा सिमराओ कुल का संस्थापक सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा नाथ देव थे मिथिला में कर्नाट वंश के शासन की नींव से एक नवीन युग आरम्भ हुआ वह था राज्य स्थापना एवं राज्यविस्तार का युग।[1] आगे चल कर कर्नाटक राजकुल का साम्राज्य नेपाल में भी स्थापित हुआ। 1097 ई0 से 1324 ई0 तक इस कुल के शासकों ने मिथिला के शासन की बागडोर को अपने हाथों रखा। इस कुल के प्रथम नृपति मान्यदेव ने 1098 ई0 में नेपाल पर विजय स्थापना की तथा 1018 ई0 तक नेपाल के प्रसिद्ध राजधानी नगर पाटन, भटगाँवों एवं काठमाण्डू पर अधिकार कर सम्पूर्ण नेपाल को अपने अधीन कर लिया। [2]

बंगाल के सेनों के समान ही मिथिला के कर्णाट शासक नान्यदेव का कुल भी दक्षिण के कर्णाट से आये हुए क्षत्रियों का कुल था। अब प्रश्न उठता है कि वे दक्षिण छोड़ सुदूर स्थित मिथिला में कैसे बस गये। इस विषय में विद्वानों में मत मिलता है किन्तु के0पी0 जायसवाल के अनुसार कर्नाटक निवासी जो पूर्व उत्तर में आकर बस गये थे वे या तो राजेन्द्र चोल की सेना के सदस्य थे या कर्णाटों के मित्र। त्रिपुरीश कर्ण (गांगेय देव के पुत्र) के सैनिक सरदारों में एक थे। कर्ण ने सम्पूर्ण मिथिला को 1040 ई0 एवं 1060 ई0 के बीच रौंद डाला था।[3] कर्णाटों ने कलचुरी कुल के भूपति कर्ण की काफी मदद की। फलतः इस सफलता और कलचुरियों से मित्रता के संबंध के कारण सम्भवतः उन्हें मिथिला का राज मिला।[4] नान्यदेव तथा उसके योग्य उत्तराधिकारियों ने मिथिला में राजनीतिक एकता के स्थापना के साथ-साथ सांस्कृतिक समरसता कायम की। जिसके फलस्वरूप साहित्य, कला, दर्शन, धर्म आदि का अद्भुत विकास हुआ।

कर्णाट कालीन धर्म यद्यपि हिन्दू धर्म था लेकिन उन दिनों अन्य धर्म विशेषकर जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म का भी विकास हुआ। यदि यह कहा जाय कि कर्णाट वंशीय शासक धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु थे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी वे धार्मिक सहिष्णुता एवं समन्वयवादी सोंच के समर्थक थे। इन्हीं कारणों से कर्णाटवंश का शासनकाल मिथिला के इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।

कर्णाट राजाओं के काल में अनेक प्रशासनिक एवं सामाजिक सुधार किये गये। सारे मिथिला राज्य को परगने में बाँटा गया। प्रत्येक परगना में राजस्व इकट्ठा करने की साथ-साथ शासन को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए समाहर्ता की नियुक्ति की गई। ऐसे पदाधिकारियों को चौधरी की उपाधि दी गई। गाँव के प्रशासन की देख-रेख के लिए पटवारियों की नियुक्ति हुई।

ग्राम आरक्षी के पदों का सृजन कर उक्त पद पर नियुक्ति की गई। धर्माधिकारियों की नियुक्ति धर्म संबंधी विवादों के निबटारा के लिए की गई। कुलीन प्रथा का समावेश कर ब्राह्मणों एवं कायस्थों की सामाजिक व्यवस्था के क्रमानुसार कई विभागों में विभक्त किया गया। इस प्रकार के सुधारों तथा उपवर्ण विभागों का वर्णन "मिथिला पंजी प्रबंध" में किया गया है। विशेषतया सुधारों के साथ विद्या, कला, स्थापत्य कला आदि के विकास की ओर कर्णाट शासकों ने ध्यान दिया। अनेक मंदिरों एवं सरोवरों का निर्माण, मनीषियों द्वारा पुस्तकों का प्रणयन राजमंत्रियों द्वारा तुलादान आदि उस काल में मिथिला के समृद्ध होने के प्रमाण हैं।

कर्णाट शासकों की राजसभा विद्वत मंडलियों से आच्छादित थी। वह युग साहित्योकर्ष का युग था कर्णाट वंशीय शासक संस्कृत विद्या को प्रश्रय देते थे। फलतः उस काल संस्कृत भाषा में अनेक ग्रंथों की रचना हुई। विद्वान मंत्री चण्डेश्वर एवं उसके वंश के अन्य लोगों ने संस्कृत अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया स्मृति ग्रंथों पर भाष्य लिखे गये, और उनका अध्ययन प्रारम्भ हुआ। श्रृंगार पर भी पुस्तकों की रचना हुई।[6] ज्योतिशवर ने मैथिली भाषा में वर्णरत्नाकर नामक ग्रंथ की रचना की।[7] श्री निवास ने भक्ति काल की टीका प्रस्तुत की। भवदत्त ने नैषध चरितम् पर भाष्य लिखा तथा पृथ्वीधर आचार्य ने मृच्छकटिक नाटक पर। हरि सिंह देव के मंत्री ज्ञानेश्वर ने 'सुगति सोपान' नामक ग्रंथ लिखा।[8] महाविद्वान श्रीकार ने अमर कोश के भाष्य के रूप में सुन्दर शब्दार्णव की रचना की। श्रीधर पंडित ने 'ज्ञान प्रकाश विवेक' लिखा। इनके अतिरिक्त और देवीष्यमान नक्षत्रों ने साहित्य एवं कला की उन्नति में अप्रतिम योगदान दिया था। श्रीधर उपाध्याय इन्द्रपति, उनके मेधावी एवं महान शिष्य लक्ष्मीपति, भवेश शर्मा आदि विद्वानों ने भी उस युग को अपनी प्रतिभा रूपी प्रकाश पुंज से आलोकित करने का काम किया। भानुदत्त मिश्र तथा अनेक विद्वानों ने अनेक लोकप्रिय श्लेषात्मक पद्य, निबंध एवं श्रृंगार रस प्रधान ग्रंथों का निर्माण किया। पद्म नाम दत्त ने 'सुपद्व' एवं उसके अन्य पूरक ग्रंथों का प्रणयन कर व्याकरण अध्ययन की एक नई पद्धति को जन्म दिया जिसका प्रचार बंगाल और जैसोर तथा खुलना जिलों में पाकिस्तान राज्य के निर्माण से पहले था सम्प्रति दोनों जिले पाकिस्तान में चले गये हैं तथा परिस्थितिवश हिन्दू जनता विस्थापित हो चुकी है तथा जो सच बन गई है वह भी विस्थापित हो रही है।

कर्णाट कालीन समाज बहुदेववादी प्रथा पर विश्वास करते थे जिसके अन्तर्गत शिव, गणेश, दुर्गा सहित लोक साहित्य पर आधारित वक्ताओं, जिनमें राजा सहलेस और लोरिक उल्लेखनीय है, की पूजा की जाती थी।

कर्णाट वंशीय शासकों के मुख्य देवता शिव थे जिसकी पुष्टि मिथिला में विद्यमान विभिन्न शिव मंदिरों से होती है। वहाँ शिव के लिए अनेक मंदिरों का निर्माण किया गया जिनमें गरीबनाथ मंदिर (मुजफ्फरपुर) कुशेश्वर स्थान तथा शिव मंदिर, दरभंगा, सोमेश्वर स्थान, चम्पारण गोविन्दगंज, वर्द्धमानेश्वर मंदिर, देवकुली के वर्द्धमानेश्वर नाथ मंदिर प्रसिद्ध हैं। मिथिला में लिखे गये भविष्यवाणी तथा नाचारी से उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि होती है।[9] कर्णाट वंशीय समाज में विष्णु पूजा का विशेष महत्व था तथा कर्णाट राजाओं ने उपासना को विशेष महत्व और संरक्षण प्रदान किया था। प्रथम का् लशासक नान्यदेव के मंत्री श्रीधर द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर इस धारणा के स्पष्ट प्रणाम हैं। तत्कालीन अभिलेखीय साक्ष्यों में अन्धरा ढाढी का श्रीधर अभिलेख और नौलागढ़ अभिलेख महत्वपूर्ण हैं। बहेड़ा से प्राप्त हुई विष्णु की बारह अवतार की मूर्ति से स्पष्ट है कि उस

समय विभिन्न अवतारों के रूप में भी विष्णु की पूजा प्रचलित थी। मदन उत्सन नामक त्योहार पूर्णिमा एवं चैग चतुर्दशी को विष्णु की उपासना के संदर्भ में मनाया जाता था शैव मनोल्लास नामक ग्रंथ के अवलोकन से पता चलता है कि शिव एवं विष्णु की पूजा साथ-साथ होती थी।"

कर्णाट वंशीय काल में मातृ पूजा का भी प्रचलन था जो कालान्तर में शक्ति पूजा का आधार स्तम्भ बना। इस प्रकार की मातृका पूजा विभिन्न षोडरा संस्कारों जैसे विवाह, मुंडन, उपनयन आदि के अवसर पर वर्तमान में भी की जाती है। इस युग में शक्ति की उपासना दुर्गा, काली, लक्ष्मी सरस्वती आदि सहित विभिन्न रूपों में की जाती थी शक्ति को उपासना में बलि देने की प्रधानता थी। इस युग में शक्ति के अनेक उपासक हुए जिनमें वर्द्धमान उपाध्याय, दवादिय एवं मदन उपाध्याय उल्लेखनीय हैं।

सूर्य पूजा भी परम्परा भी तत्कालीन समाज में थी। कर्नाट शासक नरसिंह देव द्वारा निर्मित कन्दाहा भरयादिस् सूर्य मंदिर इसके प्रमाण हैं। कर्णाट शासकों के शासन काल में देवी एवं देवताओं के तस्वीरों का अंकन इस काल के चित्रकला के उदाहरण हैं। इन मंदिरों असीरगढ़ का कंकाली मंदिर, त्रिवेणी का मंकलेश्वरनाथ मंदिर मुख्य रूप। उल्लेखनीय हैं। इन मंदिरों की शैली को स्पीकर ने "तिरहुत शैली" की संज्ञा दी है। उनके चित्रकला संबंधी प्राप्त यों से कर्नाट वंश के शासकों के धार्मिक विश्वासों अत्यधिक प्रकाश मिलता है। इस युग में लोरिक और सहलेश पूजा भी प्रचलन था जो संभव: लोक देवता थे। सुख समृद्धि की प्राप्ति के लिए उनकी उपासना की जाती थी। योतिरीश्वर के ग्रंथ 'वर्ण रत्नाकर' से ज्ञात होता है कि कृतनिया लोकनाथ विष्णु पूजा से संबंधित थे। जिसमें समाज के

भी वर्ग के लोग भाग लेते थे। इस युग में बौद्ध धर्म का भी विकास हुआ। विशेष रूप से तंत्रवाद पर आधारित सहजायन शाखा का विकास है। कालान्तर में बौद्ध आतंकवाद पर शाक्त धर्म से सम्बद्ध तंत्रवाद का काफी व्यापक प्रभाव पड़ा। तंगवाद की इस विशेषता को इस युग के प्राप्त चित्रकला पर देखा जा सकता है। ज्योतिरीश्वर ने अपने ग्रंथ वर्णरताकर में अनेक हिन्दू

तथा बौद्ध तांत्रिकों का उल्लेख किया है। इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि कर्णाट युगीन मिथिला बौद्धिक विकास का युग था इस युग में राजनीति के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रगति भी हुई। हम कह सकते हैं कि बौद्धिक चेतना एवं सांस्कृतिक विकास के लिए यह युग मिथिला के इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से जाना जायेगा क्योंकि इस वंश के शासकों ने कला, धर्म, स्थापत्य कला

ज्ञान-विज्ञान आदि

समस्त क्षणों को विकसित एवं प्रभावित करते हुए सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक

समरसता लाने का प्रयास किया। साथ ही धार्मिक सहिष्णुता की भावना को स्थापित किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जर्नल ऑफ दि बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, भाग-9, पृष्ठ-300.
2. एन्सिएन्ट इण्डिया, आर0सी0 मजुमदार, पृष्ठ-395.
3. मिथिला का इतिहास, डॉ0 राम प्रकाश शर्मा, पृष्ठ-240.
4. वही, पृष्ठ-242.
5. मिथिला का इतिहास, डॉ0 राम प्रकाश शर्मा, पृष्ठ-249.
6. हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, श्याम नारायण सिंह, पृष्ठ-69.
7. वही, पृष्ठ-70.
8. हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, श्याम नारायण सिंह, पृष्ठ-67.
9. जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसायटी, 1, 2, 3, 4, राधाकृष्ण चौधरी।
10. सेलेक्ट इन्सक्रिसन्स ऑफ बिहार, राधाकृष्ण चौधरी।
11. शैव मानसोल्लास, चण्डेश्वर।
12. जर्नल ऑफ बिहार रिसर्च सोसायटी, भाग-4, पृष्ठ - 4-7.
13. राजनीति रत्नाकर, पृष्ठ- 46, 47, 57, 58.
14. वर्ण रत्नाकर, ज्योतिरोश्वर, पृष्ठ-28.